International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 06-03-2022, Accepted: 22-03-2022, Published: 06-04-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 57-59

दिनकर के काव्य में राष्ट्र निर्माण एवं राष्ट्र की पृष्ठभुमि

ज्ञानेन्द्र दुबे
ए0 पी0 एस0 यू0 युनिवसिर्सटी रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
इस शोध पत्र का मूल उद्देश्य दिनकर की राष्ट्रीय भावना को विस्तृत जानने के लिए कि गयी है। दरअसल जिन दिनों दिनकर जी का काव्य क्षेत्र में प्रवेश हुआ। तब हिन्दी कविता की दो धाराएँ स्पष्ट रूप से प्रवाहित हो रही थी। एक धारा छायावादी काव्य की थी। जिस पर यह आक्षेप था कि वह वास्तविकता से कोशों दूर हैं तथा दूसरी धारा राष्ट्रीय कविताओं की थी जो वास्तविकता के अत्यधिक करीब होने के कारण कला की सूक्ष्म तरंगों को अपनाने में असमर्थ सी दिखती थी। पिता श्री रविसिंह एवं जननी मनरुपदेवी के द्वितीय पुत्र दिनकर एक छोटे परिवार में जन्म लेकर भी अपने ज्ञान के प्रकाश से निरंतर दैदीश्यमान होकर वह छोटी कुटिया तक सीमित न रहे बल्कि वह उसकी प्रतिभा को युगों तक निखारने में सक्षम हुए हैं। अल्पायु में पिता की छत्रछाया इनके ऊपर से दूर होने के बाद यह हारे नहीं बल्कि भरपूर भावुकत एवं हिम्मत के साथ अपने कार्य पथ पर चलते रहे। राष्ट्रीयता, जातीय, सद्भावना, उत्साह कर्मठता आदि इनके भीतर बहुत ही भरपूर मात्रा में श्रीवृद्धि हुए हैं। उनकी कविता के राश्ट्रीय सांस्कृतिक स्वर ने ऐसी गूँज पैदा की जो उस युग के स्थापित काव्य–स्वर से सर्वथा भिन्न होने पर भी सहृदय मे मन–प्राण को बाँधने वाली थी। किन्तु अज्ञेय पौरूश के धनी दिनकर ने कला को वास्तविकता के समीप ला दिया। दिनकर जी ने भाक्ति और सौंदर्य का मणिकांचन संयोग है। युग की व्यथा–कथा को गुंजित करने वाली कविता राष्ट्रीयता के स्तर पर दिनकर ने लिखी थी।

मूल शब्दः प्रतिभा, दिनकर, दैदीप्यमान, राष्ट्रीयता, कर्मठता

प्रस्तावना
दिनकर के विषय में प्रायः विस्मय सा प्रतीत होता है कि विदेशी भाासनों की हंथेली के बीच दबे हुए नौकरी–पेशा दिनकर ने आज से पचास वर्ष पूर्व कविता के माध्यम से क्रांति कि जो चिनगारी सुलगायी थी, वह कैसे अग्नि–ज्वाला बनकर धधक उठी थी और उसने कविता का प्रवाह ही बदल दिया था।
उनके समय में राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति अस्तव्यस्त थी, गांधी जी की प्रेरणा से असहयोग आन्दोलन जोर पर था। कविहृदय होने के कारण उनका मन हमेशा देश के हित के बारे में सोचते थे। सर्वत्र आर्थिक संघर्ष चल रहा था। उस समय में नौंकरी पाना आसान नहीं था, अपनी निर्दयता व अनुदारता के लिए प्रसिद्ध जमींदार साधारण किसान के पुत्र प्रतिभाशाली दिनकर कर आदर न कर सके। किन्तु इनके भीतर जो राष्ट्र के प्रति प्रेम की भावना निहित थी वह अद्वितीय थी जिसके कारण इनकी कविताओं में भी उसकी झलक दिख जाती है–

''देश प्रेम की जन्म–भुमि है, पर उसके विचरण की
सारी लीली –भुमि नहीं सीमित हैं रुधिर त्वचा तक।
यह सीमा प्रसरित है मन के गहन, गुहा लोकों में,
जहाँ रुप की लिपि अरुप की छवि आँका करती है,
और पुरुष प्रत्यक्ष विभासित नारी मुखमण्डल में
किसी दिव्य, अव्यक्त कमल को नमस्कार करता है।''[1]

दिनकर जी जैसे कलमकार अद्भुत व्यक्तित्व वाले मानव की जीवन गति भोष ही रहेगी। यहाँ तक दिनकर जी की ओजपूर्ण वाणी उनकी लेखनी तथा युग की व्यथा–कथा को गुंजित करने वाली कविता राश्ट्रीयता के स्तर पर दिनकर ने लिखी थी। देश की आजादी के लिए संघर्श करने वाले लाखों व्यक्तियों के मन में उत्सर्ग और बलिदान की भावना उत्पन्न करने वाले कवियों में अग्रणी हैं। जीवन की निर्धनता को अपनी कर्मठता के आगे कभी नहीं आने देने की जो कला दिनकर के भीतर विद्यमान थी वह उन्हें हिन्दी के काव्य संसार की बहुलता में प्रमुख स्थान प्रदान करती है। भारत देश का गौरवगान करने वाले तथा मातृभुमि पर जान न्यौछावर करने वाले वीरों की वीरता को अपनी कलम में अवतरित करने का कार्य दिनकर ने बखूबी किया है।
माखनलाल चतुर्वेदी को छोड़कर हिन्दी का कोई दूसरा कवि राष्ट्रीय जागरण की दिशा में इतना सक्रिय नही हुआ, उसके बाद फिर दिनकर का नाम ही आता है। हिमालय और दिल्ली भाशीर्शक इतिहास प्रवण कविताओं ने प्रबुद्ध वर्ग को जिस गहरे भावबोध से उकेलित किया था वैसी राष्ट्र रचेतना का उद्बोधन और उद्वेलन भाायद ही कही अत्यत्र देखने को मिले। इसमें कवि के ऊपर छायावादी युग का प्रभाव भी पड़ा है। इसमें कवि ने तन मन से प्रेमिका का आव्हान किया। इसी दिशा परिवर्तन के समय की राष्ट्रीय भावनाओं को प्राकृतिक प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करने लगते हैं।

कई देशभक्त बड़े नेताओं को बन्दीग्रह में डाल दिया गया था। जिससे एक अलग वातावरण निर्मित था। इसका प्रभाव दिनकर पर भी पड़ा लेकिन वे हुकार जैसी ओजस्विनी ताकी नही व्यक्त कर सकें क्योकि उस वक्त वे स्वयं सरकार के प्रभाव विभाग में नियुक्त थे। समिधा से व्युत्पन्न सामधेनी नामक संग्रह में दिनकर ने संकेत किया –

''सुलगती नही यज्ञ की आग,
दिशा धूमिल यजमान अधीर
पुरोधा कवि कोई है यहाँ
देश को दे ज्वाला के तीर ।''[2]

अनेकों रचनाओं में उनकी काव्यकुशलता ने समाज को एक विशिष्ट स्थान दिया है, उनकी रचना कुरूक्षेत्र में युद्ध में उचित अनुचित की चर्चा है जगत में युद्ध है अतः शांति का आभाव है, मनुष्य का लक्ष्य से आरंभ कर शान्ति तक पहुचना है। कुरूक्षेत्र में इसी भाव का निदर्शन है। संघर्ष प्रिय रचनाकार युद्ध को अत्याचार के विरूद्ध का पर्याय मानता है। तथापि संपूर्ण काव्य में मानवादी स्वर का प्रधान्य है।
रचनाकार दिनकर गांधी के सिद्धान्तों के कायल थे। उनसे प्रभावित थे किन्तु जिस सिद्धान्त और बूते पर गांधाी ने देश को स्वाधीनता के द्वारा पर ला खड़ा किया । ''उसी सिद्धिन्त और बूते को स्वाधीनता आन्दोलन के अखिरी दिनो में मलिन होते देख दिनकर जी को लगा कि जो गुण व्यक्ति के लिए उत्तम है जरूरी नही कि समस्टि के लिए भी वे कल्याणकारी हो, इसी अहाकोह से कुरूक्षेत्र का जन्म हुआ।''[3]
हिन्दी कविता के विकास की प्रष्ठभूमि में अपने काव्य विकास की कहानी चक्रवात के 76 पृष्ठों की भूमिका में दिनकर ने प्रस्तुत कि है। 1956 में इसका प्रकाशन हुआ। चक्रवात रीतिकाल से लेकर प्रयोगवाद तक की हिन्दी कविता के निकास को अत्यंत सुलझा हुआ विवेचन प्रस्तुत करने वाला काव्य संकलन है। आत्मज्ञान की प्रक्रिया अत्यन्त कठिन है।
कभी–कभी कवि भी अपने सही रूप को समझने में भूल कर जाता है। यही भूल दिनकर ने चक्रवात की भूमिका में कि है अन्यथा इस बात में तो रित्ती भर भी संदेह नहीं किया जाना चाहिए था कि दिनकर का मूल स्वर राष्ट्रीयता का स्वर रहा है।
वास्तव में राष्ट्र के प्रति समर्पित व्यक्तित्व के धनी रामधारी सिंह दिनकर का स्वभाव भी क्रोध और भावुकता से परिपूर्ण रहा है, जिसके कारण उनके कविताओं में वही बात झलकती है। वह नारी जाति से अधिक बात करने में कुशल नहीं थे वह शर्मीले व गर्बीले दोनों ही माध्यम से गजब के व्यक्तित्व के धनी और कलम के ऊर्जावान कवियों में अपना नाम दाखिला करवा चुके हैं, उसके लिए उनकी कविताओं का प्रमुख योगदान है–

''एक मनुज जिसका शरीर ही बन्दी है पाशों में,
लेकिन जो जी रहा मुक्त हो जनता की साँसों में।''[4]

''उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए भागलपुर वि ववियालय ने उन्हें डी0 लिट की मानद उपाधि से विभूशित किया। 12 जनवरी 1962 ई. में राजस्थान, विद्यापीठ उदयपुर द्वारा 'साहित्य चूड़ामणि' की उपाधि से नवाजा गया। प्रसिद्ध पुस्तक 'उर्वशी' पर सन् 1973 ई. में भारतीय ज्ञानपीठ का एक लाख रुपये का पुरस्कार सम्मान दिल्ली के विज्ञान भवन में दिया गया।''[5]
इसके अलावा उन्हें इलाहाबाद तथा बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना द्वारा अनेक पुरस्कार दिये गये हैं। यूनाएटेड एशिया में दिनकर जी की आठ कविताओं का अनुवाद छपा। जिसके लिए उन्हें उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सम्मानित किया गया।
दिनकर जी का आत्मविश्वास, अहं, निर्भीकता, स्पष्टवादिता, सामाजिकता, दार्शनिक–चिंतक और निस्वार्थी रुप उनके साहित्य में स्थान–स्थान पर दृष्टव्य होता है। सहृदयता तथा आत्मीयता का भाव उन्हें ओजमयी वाणी और लोकप्रिय कवि की दुनिया में प्रसिद्धि देता है। दिनकर कविता पाठ करते समय बीच–बीच में चुटकुले सुनाकर मनोविनोद की कला में भी काफी माहिर तथा विनोदप्रियता की बदौलत उनको स्त्रियों के बीच भी काफी लोकप्रियता प्राप्त थी–

''इन द्विपों के बीच चन्द्रमा मन्द–मन्द चलता है,
मन्द–मन्द चलती है नीचे वायु श्रान्त मधुवन की,
मद–विव्हल कामना प्रेम की, मानो अलसायी–सी,
कुसुम–कुसुम पर विरम मन्द, मधु, गति में घूम रही हो।''[6]

प्रेम और आत्मिक भाव के साथ प्रकृति का भी समावेश भी अपनी राष्ट्रीयता को खोजने का कार्य दिनकर ने कर दिखाया है।
इस अध्याय में इन दोनों महान कवियों का जीवन वृत्तांत तथा उनके काव्य संबंधी विषय में जानकारी दी गयी है, जो कि मौलिकता का प्रमाण प्रस्तुत करती है। दिनकर की काव्य चेनता का मूल उत्स द्वन्द्वत्मक है इसका एक स्वर रागात्मक प्रेम एवं श्रंगार के धरातल पर युग चेतना का अंग तनता है और दुसरा विद्रोही क्रातिकारी ओज एवं पुरूषार्थ से भराहुआ देश प्रेम एवं राष्ट्रीयता की भावना जगाने वाला है।
दिनकर की काव्य चेतना सांस्कतिक एवं राष्ट्रीय धरातल से ऊपर उठकर अंतर्राष्ट्रीय क्षितिका की सीमा को स्पर्श करती है। इनकी रचनाएं विश्व मानवता एवं आत्मशक्ति को ऊचाई तक पहुचाती है।
अपनी उसी सांस्कृतिक तथा राश्ट्रीय चेतना के इस अमरावली को हमारे हिन्दी साहित्य के महान विद्वान, गुणी, रचनाकार श्री रामधारी सिंह दिनकर जी का प्रखर व्यक्तित्व हमकों जीवन की चरम–सीमा तक लाकर अभिभूत करता हुआ

भारतीयता की राश्ट्रीयता एवं संस्कृति के विरासत का अमूल्य सार दिखलाया हैं। वेद, पुराण, उपनिशद, रामायण, महाभारत, गीता अन्य अनेक विशयों के भाास्त्रीय ग्रंथ हैं।

जो हमारे संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं परिचायक ग्रंथ हैं। जब हम हिन्दी साहित्य का इतिहास पढ़ते हैं उसको मनन करने के उपरान्त यह ज्ञात होता हैं कि परतंत्रता के समय भारत को खोये हुए गौरव को तथा भारत की उदात्त निर्मल सांस्कृतिक तस्वीर को पुनः प्रतिश्ठित करने का जो कार्य भारतेन्दु हरी ाचन्द्र ने प्रारम्भ किया था वह क्रम ाः अग्रसर होता हुआ श्री दिनकर जी के समान कवियों को पाकर इनके व्यक्तित्व के प्रका ा से ज्योर्तिमान होकर दमक उठा।

दिनकर जी ने भारतीय संस्कृति के गरिमामय अतीत को नये निखार के साथ प्रस्तुत कर अपनी सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति द्वारा परतंत्र भारत में देश के खोये हुए गौरव एवं आत्मसम्मान को प्रतिश्ठित करने में उनकी काव्य चेतना प्रखरता से उद्भुत हुई है।

रचनाकार ने जिस प्रकार सांस्कृतिक निर्माता बनकर धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, दा ार्निक, आर्थिक कलाक्षेत्र के जिन महान सिद्धांतों की व्यख्या प्रस्तुत की है उसमें राष्ट्रीय चेतना का प्रतिबिम्ब प्रखरता से व्यक्त हुई है। स्वराज प्राप्त कर लेने के बाद भी देश को करोड़ों लोगों का अन्याय, अत्याचार तथा भाोशण में दबे–कुचले देखा। श्री दिनकर जी का क्रांतिकारी स्वर राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना को उजागर करता रहा।

निष्कर्ष

भारत की संस्कृति में मौलिकता और सृजनात्मक भाक्ति रही है। इसका स्थायी प्रभाव एशिया के तमाम देशों पर हुआ एवं आज भी अपने प्रभावशाली अस्तित्व को स्थायी रूप से अपने सांस्कृतिक गौरव को बचाये रखा है। दिनकर ने भारतीयता के अमर स्वर को अपनी लेखनी द्वारा साहित्य को अनुपम निधि प्रदान करने का कार्य किया है। यहाँ की धरती ने महान सन्तों कवियों, कलाकारों एवं महापुरूशों के साथ–साथ अनुपम दृश्यों को भी अपनी गोद में समाहित किया है। राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक काव्यधारा की प्राचीनता निरंतरता तथा सत्यता की विशिष्टता को प्रस्तुत करते हुए अपना सारा जीवन व्यतीत किया है।

इनके अतिरिक्त अनेक कवियों ने सांस्कृतिक एवं राष्ट्रिय काव्य का सृजन किया किन्तु वे आगे प्रयोगवादी बन गए। प्रयोगवादी कवियों में प्रमुखता दो प्रवृत्तियों की है। व्यक्तिवाद और यथार्थवाद इसे व्यक्तिपरक यथार्थवाद या अति यथार्थवाद आदि नामों से भी पुकारा जाता है। उक्त सारी परिस्थितियाँ राष्ट्रियता से परिभूत सी प्राप्त होती है। इस कारण कि नाम में अभिप्राय भी स्पष्ट हो जाता है।

संदर्भ सूची

1. उर्वशी –तृतीय सर्ग, पृ0 56, रामधारी सिंह दिनकर, उदयाचल प्रकाशन, राजेन्द्रनगर, संस्करण 1968
2. सामधेनी –कविता संग्रह–पृ0 18, दिनकर , उदयाचल प्र.पटना
3. दिनकर : एक सहज पुरुष–पृ0 56, शिवसागर मिश्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, संस्करण 1936
4. मृतितिलक–पटना जेल की दीवाल से–पृ036, रामधारी सिंह दिनकर उदयाचल प्रकाशन
5. दिनकर–सम्पादिका–पृ0 69, डॉ0 सावित्री सिन्हा, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2–अन्सारी रोड, दरियागंज दिल्ली सं. 1965
6. उर्वशी –पृ0 5, अंक 4, रामधारी सिंह दिनकर , उदयाचल प्रकाशन, संस्करण 1969
7. आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियां– डॉ. नगेन्द्र गौतम, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,